डाला छठः चार दिवसीय सूर्य उपासना का महापर्व

सौभाग्य, आरोग्य व सर्वसुख प्रदाता छठव्रत : १३ से १६ नवम्बर

व्रत का प्रथम नियम-संयम 13 नवम्बर, शुक्रवार को
व्रत का द्वितीय संयम 14 नवम्बर, शनिवार को
अस्ताचलगामी सूर्यदेव को प्रथम अर्घ्य 15 नवम्बर, रविवार को सायंकाल
उगते हुए सूर्यदेव को द्वितीय अर्घ्य 16 नवम्बर, सोमवार को







प्रत्यक्ष देव भगवान सूर्यदेव की आराधना से जीवन में हर्ष, उमंग, उल्लास व ऊर्जा का संचार होता है। सूर्यदेव की महिमा में रखने वाला डालाछठ, जिन्हें छठपर्व भी कहते हैं, कार्तिक शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि से प्रारम्भ होगा, जिसका समापन कार्तिक शुक्लपक्ष की सप्तमी तिथि के दिन होता है। ज्योतिषविद् श्री विमल जैन जी ने बताया कि इस बार भगवान सूर्यदेव की आराधना का चार दिवसीय महापर्व 13 नवम्बर, शुक्रवार से प्रारम्भ होकर 16 नवम्बर, सोमवार तक चलेगा। सुख-समृद्धि, खुशहाली के लिए सृष्टि के नियंता भगवान सूर्यदेव की महिमा अपरम्पार है। सूर्य षष्ठी के व्रत से पाण्डवों को अपना खोया हुआ राजपाट एवं वैभव प्राप्त हुआ था। एक मान्यता यह भी है कि कार्तिक शुक्ल षष्ठी के सूर्यास्त तथा सप्तमी तिथि के सूर्योदय के मध्य वेदमाता गायत्री का प्रादुर्भाव हुआ था। ऐसी भी पौराणिक मान्यता है कि भगवान राम के वनवास से लौटने पर राम और सीता ने कार्तिक शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन उपवास रखकर प्रत्यक्ष भगवान सूर्यदेव की आराधना कर तथा सप्तमी तिथि के दिन व्रत पूर्ण किया था। इस अनुष्ठान से प्रसन्न होकर भगवान सूर्यदेव ने उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया था। फलस्वरूप सूर्यदेव की आराधना का छठपर्व मनाया जाता है। इस चार दिवसीय पर्व में भगवान सूर्य की ही आराधना का विधान है। ज्योतिषविद् विमल जैन जी ने बताया कि सूर्य की आराधना का चार दिवसीय महापर्व 17 नवम्बर, शुक्रवार से प्रारम्भ होकर 20 नवम्बर, सोमवार तक चलेगा। कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि (12 नवम्बर, गुरुवार को सायं 6 बजकर 10 मिनट पर लगेगी, 13 नवम्बर को मूल नक्षत्र सायं 5/18 तक)व्रत का प्रथम नियम-संयम,कार्तिक शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि (13 नवम्बर, शुक्रवार को रात्रि 8 बजकर 43 मिनट पर लगेगी, 14 नवम्बर को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 8/25 तक) 14 नवम्बर, शनिवार को द्वितीय संयम (एक समय खरना), षष्ठी तिथि (14 नवम्बर, शनिवार को रात्रि 11 बजकर 25 मिनट पर लगेगी, 15 नवम्बर को उत्तराषाढ़ा रात्रि 11/29 तक) 15 नवम्बर, रविवार को व्रत के तृतीय संयम के अर्न्तगत सायंकाल अस्ताचल (अस्त होते हुए) सूर्यदेव को प्रथम अर्घ्य दिया जाएगा। सप्तमी तिथि (15 नवम्बर, रविवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 2 बजकर 02 मिनट पर लगेगी, प्रात:काल श्रवण नक्षत्र रहेगा) 16 नवम्बर, सोमवार को चतुर्थ एवं अन्तिम संयम के अन्तर्गत प्रात:काल उगते हुए सूर्यदेव को द्वितीय अर्घ्य देकर छठ व्रत का पारण किया जाएगा। इस चार दिवसीय महापर्व पर सूर्यदेव की पूजा के साथ माता षष्ठी देवी की भी पूजा-अर्चना करने का विधान है। इस पर्व पर नवीन वस्त्र, नवीन आभूषण पहनने की परम्परा है। यह व्रत किसी कारणवश जो स्वयं न कर सकें, वे अन्य व्रती को अपनी ओर से समस्त पूजन सामग्री व नकद धन देकर अपने व्रत को सम्पन्न करवाते हैं। श्री विमल जैन जी ने बताया कि प्रथम संयम 13 नवम्बर, शुक्रवार चतुर्थी तिथि के दिन सात्विक भोजन जिसमें कद्दू या लौकी की सब्जी, चने की दाल तथा हाथ की चक्की से पीसे हुए गेहूँ के आटे की पूड़ियाँ ग्रहण की जाती हैं, जिसे नहाय-खाय के नाम से जाना जाता है। अगले दिन 14 नवम्बर, शनिवार पंचमी तिथि को सायंकाल स्नान-ध्यान के पश्चात् प्रसाद ग्रहण करते हैं। जो कि धातु या मिट्टी के नवीन बर्तनों में बनाया जाता है। प्रसाद के रूप में (नये चावल से बने गुड़ की खीर) ग्रहण किया जाता है, जिसे अन्य भक्तों में भी वितरित करते हैं, इसे खरना के नाम से भी जाना जाता है। तत्पश्चात् व्रत रखकर 15 नवम्बर, रविवार षष्ठी तिथि के दिन सायंकाल अस्ताचल (अस्त होते हुए) सूर्यदेव को पूर्ण श्रद्धाभाव से अर्घ्य देकर उनकी पूजा की जाएगी। पूजा के अन्तर्गत भगवान सूर्यदेव को एक बड़े सूप या डलिया में पूजन सामग्री सजाकर साथ ही विविध प्रकार के ऋतुफल, व्यंजन, पकवान जिसमें शुद्ध देशी घी का गेहूँ के आटे तथा गुड़ से बना हुआ ठोकवा प्रमुख होता है, भगवान सूर्यदेव को अर्पित किया जाता है। भगवान सूर्यदेव की आराधना के साथ ही षष्ठी देवी की प्रसन्नता के लिए उनकी महिमा में गंगाघाट, नदी या सरोवर तट पर लोकगीत का गायन करते हैं, जो रात्रिपर्यन्त चलता रहता है। रात्रि जागरण से जीवन में नवीन ऊर्जा के साथ अलौकिक शान्ति भी मिलती है। अन्तिम दिन 16 नवम्बर, सोमवार सप्तमी तिथि के दिन प्रात:काल उगते हुए सूर्यदेव को धार्मिक विधि-विधान से अर्घ्य देकर छठव्रत का पारण किया जाएगा। यह व्रत मुख्यत: महिलाएँ ही करती हैं। आजकल पुरुष भी इस व्रत को करने लगे हैं। महिलाएँ अधिक से अधिक लोगों में शुभ मंगल कल्याण की भावना रखते हुए भक्तों में प्रसाद वितरण करती हैं, जिससे उनके जीवन में सुख-समृद्धि सौभाग्य बना रहे। इस महापर्व पर स्वच्छता व पूर्ण सादगी तथा नियम-संयम अति आवश्यक है। इस पर्व पर जीवन में सुख-समृद्धि, सौभाग्य हेतु परिवार के समस्त सदस्य पूर्ण निष्ठा के साथ अपनी सहभागिता निभाते हैं।

खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शवेदा


सुविचार
सकारात्मक सोच से ही जीवन में बदलाव आता है।
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg | amazon | Flipkart



विश्वास

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

अक्सर प्रेम को दो व्यक्तियों के बीच का संबंध समझा जाता है। यदि आप जिससे प्रेम करते हैं, उसके साथ एकात्मता का अनुभव नहीं करते, तो कालांतर में संदेह उत्पन्न होता है। संदेह के कारण आप बिना शर्त प्रेम करने और उसमें विलीन होने में असमर्थ हो जाते हैं। अतः प्रेम में विश्वास अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक स्थिति और भाव, जो प्रेम का विरोध करते प्रतीत होते हैं, उनके प्रति उदासीन रहें। कभी-कभी ऐसी घटनाएँ घटित हो सकती हैं, जो प्रेम के विरुद्ध हों। जिनसे प्रतीत होता है कि ईश्वर हमसे प्रेम नहीं करते। उन घटनाओं के प्रति उदासीन रहें; अन्यथा प्रेम, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या और निराशा जैसे विपरीत तथा नकारात्मक भावों में उलझना अत्यंत सरल हो जाता है। यदि आप प्रेम में केंद्रित रहना चाहते हैं, तो आपको उन सभी बातों को छोड़ना होगा जो प्रेम का विरोध करती प्रतीत होती हैं; अन्यथा आप विरोधों के चक्र में फँस जाएँगे। तब आप कभी मुक्त नहीं हो पाएँगे और उस पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इस संसार में आपके जन्म का उद्देश्य पूर्णता को प्राप्त करना है। पूर्णता केवल कार्य या वचन में नहीं होती, अपितु अस्तित्व में होती है। केवल अस्तित्व की पूर्णता ही वचन और क्रिया में पूर्णता ला सकती है। अस्तित्व में पूर्ण होने के लिए, आपको प्रेम में डुबना होगा। अक्सर मनुष्य अनेक सहारों पर निर्भर रहता है। उदाहरण के लिए, यदि आप आध्यात्मिक मार्ग पर हैं, तो कभी-कभी आप किसी ज्योतिषी के पास जाकर पूछते हैं-क्या मैं प्रगति करूँगा? क्या होगा? इस प्रकार आप एक और सहारा खोज रहे होते हैं। किंतु परम की प्राप्ति के लिए अंततः सभी सहारों को छोड़ देना आवश्यक है। मन बैसाखियों की तलाश करता है, किंतु परमात्मा की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि सभी सहारों का त्याग कर दिया जाए-निराधार और निराश्रित बनकर। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है- अनन्याश् चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते अर्थात् मैं उनके लिए हूँ, जो एकाग्रचित्त होकर अन्य किसी सहारे की तलाश नहीं करते। मैं उनके लिए आधार बन जाता हूँ, जो बैसाखियों की खोज नहीं करते।

६५ की महिला और २५ का लड़का... ४० साल का फासला, फिर भी प्यार बेमिसाल

65 साल की हॉलीवुड आइकॉन डेमी मूर और 25 साल के एक युवा के बीच वेकेशन की खबरों ने इन दिनों सोशल मीडिया पर तहलका मचा रखा है। मजेदार बात यह है कि जो एक्ट्रेस हाल ही में अपनी सिंगल लाइफ को एन्जॉय करने और अकेले रहने की बातें करती रहीं हैं, वो अचानक एक कम उम्र के बॉयफ्रेंड के साथ छुट्टियों मनाती नजर आईं. जैसे ही इनकी ये तस्वीरें और खबरें वायरल हुईं, इंटरनेट पर एक बार फिर 'मे-दिसंबर रोमांस' यानी उम्र के भारी फासले वाले रिश्तों



को लेकर बहस छिड़ गई है.बता दें कि इस शब्द का सीधा-सा मतलब ऐसे रिश्तों से है, जिनमें दोनों पार्टनर्स की उम्र में जमीन-आसमान का फर्क होता है. जैसे मान लीजिए, अगर कोई महिला 65 साल की है और उनका पार्टनर 25 साल का है, तो दोनों के बीच पूरे 40 साल का फासला है! बस, ऐसे ही रिश्तों को 'मे-दिसंबर रोमांस' का नाम दिया गया है.दरअसल, अंग्रेजी कैलेंडर का 'मे' (मई) यानी साल का वो महीना जब हर तरफ बहार होती है, जवानी और ताजगी अपने चरम पर होती है. और इसके उलट 'दिसंबर' यानी साल का आखिरी और ठंडा महीना, जिसे जिंदगी के ढलते पड़ाव से जोड़कर देखा जाता है. इसी से यह टर्म बना है, जहाँ एक पार्टनर एकदम जवान और दूसरा उम्र के काफी बड़े पड़ाव पर होता हैउम्र के इस बड़े फासले के बाद भी क्यों आकर्षित होते हैं लोग ?जब भी ऐसा कोई रिश्ता सुर्खियों में आता है, तो सबसे पहला सवाल यही उठता है कि आखिर एक मेच्योर इंसान को कम उम्र का पार्टनर और यंगस्टर को उम्रदराज महिला या पुरुष क्यों भाते हैं? मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि प्यार का यह समीकरण सिर्फ बाहरी दिखावे या आकर्षण तक सीमित नहीं होता, इसके पीछे कुछ गहरी मानसिक वजहें होती हैं-कई बार कम उम्र के लड़कों को ऐसे पार्टनर की तलाश होती है जो जिंदगी को गहराई से समझती हो, जिनके पास इमोशनल मैच्योरिटी हो और जो छोटी-मोटी बातों पर ड्रामा न करती हों. बड़ी उम्र के पार्टनर (चाहे महिला हो या पुरुष) के पास जिंदगी का लंबा तजुर्बा होता है, जिससे रिश्ते में गजब का ठहराव और मानसिक सुरक्षा मिलती है.60 की उम्र पार कर चुकीं महिलाएं या लोग अपनी फिटनेस, गजब के कॉन्फिडेंस और खुद को जिस सलीके से संभाल कर रखते हैं, वह नई पीढ़ी को बहुत अट्रैक्टिव लगता है. भले ही प्यार अंधा होता है, पर ऐसे रिश्तों में कुछ दिक्कतें भी आती हैं, जैसे दोनों की लाइफस्टाइल अलग होना, पसंद-नापसंद में फर्क होना और भविष्य को लेकर अलग सोच होना. ऊपर से हमारे समाज के ताने और परिवार की प्रतिक्रिया भी इस रिश्ते पर काफी प्रेशर डालती है.कुल मिलाकर बात यह है कि मे-दिसंबर रोमांस को सिर्फ उम्र के चश्मे से देखना बिल्कुल सही नहीं है।

सिंदूर सिर्फ लाल नहीं, नारंगी और गुलाबी भी है खास

लोक आस्था का महापर्व छठ आते ही घरों में रौनक बढ़ जाती है। कहीं ठेकुआ और कसार बनाने की तैयारी होती है, तो कहीं महिलाएं पूजा और साज-श्रृंगार में जुट जाती हैं। छठ के दौरान महिलाओं का पारंपरिक रूप देखते ही बनता है. इस मौके पर एक चीज खास तौर पर ध्यान खींचती है, वह है महिलाओं की मांग में लगा सिंदूर.आमतौर पर शादीशुदा महिलाएं लाल या मैरून सिंदूर लगाती हैं, लेकिन छठ के दौरान बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में नारंगी और गुलाबी सिंदूर भी देखने को मिलता है. खासकर मिथिला क्षेत्र में इन रंगों की अपनी अलग पहचान और परंपरा है. कई जगह इसे भखरा सिंदूर भी कहा जाता है. भारतीय परंपरा में लाल सिंदूर को शादीशुदा महिलाओं के सुहाग की सबसे प्रचलित निशानी माना जाता है। यही वजह है कि छठ के मौके पर सिंदूर के रंग को लेकर लोगों के मन में सवाल उठता है कि आखिर महिलाएं इस दिन नारंगी या गुलाबी सिंदूर क्यों लगाती हैं? क्या इन रंगों का कोई खास धार्मिक या सांस्कृतिक महत्व है? लाल रंग को प्रेम, ऊर्जा, शक्ति और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है. यही वजह है कि बंगाल और उत्तर भारत के कई हिस्सों में महिलाएं रोजाना अपनी मांग में लाल या मैरून सिंदूर लगाती हैं. धार्मिक मान्यताओं में लाल रंग का संबंध देवी शक्ति से भी जोड़ा जाता है। त्योहार



हो, पूजा-पाठ हो या कोई शुभ अवसर, लाल सिंदूर महिलाओं के पारंपरिक श्रृंगार का अहम हिस्सा है. बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाकों में नारंगी यानी केसरिया सिंदूर लगाने की परंपरा है. कुछ जगह इसे भखरा सिंदूर भी कहा जाता है. नारंगी रंग को ऊर्जा, शुभता और नई शुरुआत से जोड़कर देखा जाता है. छठ पर्व में सूर्य देव की उपासना का विशेष महत्व है.ऐसे में सूर्योदय के समय आसमान में बिखरने वाली नारंगी और लालिमा लिए किरणों की तरह सिंदूर का यह रंग भी खास माना जाता है। इससे जुड़ी एक प्रचलित धार्मिक कथा हनुमान जी और माता सीता की भी है। मान्यता है कि एक बार हनुमान जी ने माता सीता को मांग में सिंदूर लगाते देखा और इसका कारण पूछा. माता सीता ने बताया कि वह भगवान राम की लंबी उम्र और मंगल की कामना के लिए सिंदूर लगाती हैं। यह सुनकर हनुमान जी ने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति दिखाने के लिए पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया. इसी वजह से हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाने की परंपरा भी प्रचलित है.गुलाबी सिंदूर भी बिहार और मिथिला की कुछ पारंपरिक रस्मों में खास जगह रखता है. इसे कई जगह भखरा सिंदूर के नाम से भी जाना जाता है. गुलाबी रंग को प्यार, कोमलता, अपनापन और रिश्तों में मिठास का प्रतीक माना जाता है. कुछ स्थानीय मान्यताओं में इसका संबंध सुबह की लालिमा और नई जिंदगी की शुरुआत से भी जोड़ा जाता है। खास बात यह है कि मिथिला की कई पारंपरिक शादियों में दुल्हन के श्रृंगार के दौरान गुलाबी या नारंगी-गुलाबी सिंदूर का इस्तेमाल देखने को मिलता है।

न तलाक दूंगी, न २० लाख लौटाऊंगी

क्या आपसी सहमति से तलाक के लिए तय रकम लेने के बाद कोई



पक्ष अपने वादे से पीछे हट सकता है? दिल्ली हाई कोर्ट के सामने ऐसा ही एक मामला आया। इसमें पत्नी ने पति से समझौते के तहत 20 लाख रुपये लिए थे. इसके बावजूद उसने तलाक की प्रक्रिया पूरी करने से इनकार कर दिया. मामला सुनने के बाद हाई कोर्ट ने पत्नी को छह सप्ताह के भीतर 20 लाख रुपये लौटाने का आदेश दिया. अदालत ने इस मामले में पति की ओर से दायर अवमानना याचिका स्वीकार कर ली. हालांकि, अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि आपसी सहमति से तलाक में अंतिम डिक्री जारी होने तक किसी भी पक्ष को अपनी सहमति वापस लेने का अधिकार है. इस मामले में अदालत का फैसला समझौते की शर्तों और उनके पालन से जुड़ा था।

टॉक्सिकमें इंटीमेट सीन देकर घिरीं कियारा आडवाणी

बॉलीवुड में शादी के बाद अभिनेत्रियों के ऑनस्क्रीन किरदारों और उनके फैसलों को लेकर अक्सर सवाल उठाए जाते रहे हैं। खासकर जब कोई अभिनेत्री शादी और मां बनने के बाद पर्दे पर बोल्ड या इंटीमेट सीन करती है, तो उसे सोशल मीडिया पर आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसा ही कुछ कियारा आडवाणी के साथ भी हुआ, जब फिल्म टॉक्सिकमें यश के साथ उनके इंटीमेट सीन को लेकर उन्हें जमकर ट्रोल किया गया। अब अभिनेत्री ने इस पूरे विवाद पर अपनी चुप्पी तोड़ी है और बताया है कि इस मामले पर पति सिद्धार्थ मल्होत्रा का क्या रिएक्शन था। कॉफी विद करण सीजन 9 में सिद्धार्थ के साथ पहुंचीं कियारा ने बताया कि शादी और मां बनने के बाद फिल्म में उनके ऑनस्क्रीन चुनावों को लेकर इंटरनेट पर कई तरह के सवाल उठाए गए थे। कियारा ने साफ किया कि सोशल मीडिया पर हो रही बातों से सिद्धार्थ को कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने इस मुद्दे को कभी परेशानी नहीं माना और न ही इस बारे में उनसे कोई सवाल किया। अभिनेत्री ने कहा, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उन्होंने कभी इस बारे में बात नहीं की। हमने इस पर कभी चर्चा भी नहीं की। इसका उन पर कोई असर नहीं पड़ा और वह बिल्कुल भी परेशान नहीं थे। सोशल मीडिया पर हुई आलोचना को लेकर कियारा ने कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं को इस तरह की बातों का सामना दशकों से करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा, यह कई वर्षों से, दशकों से होता आ रहा है। ऐश्वर्या से लेकर कई शानदार अभिनेत्रियों को इसका सामना करना पड़ा है। कियारा ने यह भी बताया कि उस समय उन्हें अपनी तरफ से कोई सफाई देने की जरूरत महसूस नहीं हुई, क्योंकि इंटरनेट पर कई लोग पहले ही इस दोहरे रवैये पर सवाल उठा रहे थे।



इंसानी चेहरेमें दिखती बिल्ली की आंखें

अमेरिका के 28 साल के एक व्यक्ति कार्ल को एक अनोखी बीमारी हो गई है। उसे इंसानों के चेहरे देखकर उनमें अपनी पालतू बिल्ली की आंखें और चेहरे की दूसरी खूबियां नजर आती हैं। कभी उसे इंसानों के चेहरे पर बिल्ली जैसी बड़ी पुतलियां, आंखों के आसपास का आकार और धारियां दिखाई देती हैं। यह मामला 'डेमन फेस सिंड्रोम' नाम की एक बेहद दुर्लभ बीमारी से जुड़ा है. उसे बचपन से यह बीमारी नहीं थी। बल्कि कुछ साल पहले हुई ब्रेन सर्जरी के बाद कार्ल इस परेशानी से जूझ रहा है। अब उसे दिनभर मिलने वाले लोगों के चेहरों में अपनी पालतू बिल्ली लूना की शक्ल नजर आती है.'पॉपुलर साइंस' की रिपोर्ट के अनुसार सबसे मजेदार बात ये है कि कार्ल सुबह-सुबह जो चेहरा सबसे पहले देखता है, उसे दिनभर वही चेहरा नजर आता है. अगर सुबह सबसे पहले वह अपनी बिल्ली को देख लेता है, तो दिनभर इंसानों के चेहरों में बिल्ली की झलक दिखाई देती है. वहीं, अगर सुबह सबसे पहले किसी इंसान का चेहरा देखता है, तो उसे अपनी बिल्ली के चेहरे में इंसानी आंखें और दूसरी खूबियां नजर आने लगती हैं. 'डेमन फेस सिंड्रोम' नाम की इस बीमारी का मेडिकल नाम प्रोसोपोमेटामॉर्फोप्सिया है. इस बीमारी में व्यक्ति को दूसरे लोगों के चेहरे असली रूप से अलग, विकृत या डरावने दिखाई देते हैं. उसे पैलिनोप्सिया नाम की एक विजुअल समस्या है. इसमें व्यक्ति किसी चीज को देखने के बाद भी उसकी छवि बार-बार देखता रहता है, जबकि वह चीज उसके सामने मौजूद नहीं होती. दिमाग में आंखों से मिलने वाली जानकारी को प्रोसेस करने की प्रक्रिया में गड़बड़ी होने पर ऐसा हो सकता है. माइग्रेन, दौरे, मिर्गी, स्ट्रोक, कुछ दवाओं के इस्तेमाल और दिमाग में ब्लीडिंग



जैसी स्थितियां भी इसकी वजह बन सकती हैं। कार्ल को यह समस्या करीब दो साल पहले ब्रेन सर्जरी के बाद शुरू हुई. दरअसल, उसके दिमाग के दाहिने हिस्से में टेम्पोरल लोब की कुछ कोशिकाएं निकालनी पड़ी थीं। वहां दिमाग की धमनियों और नसों के बीच खून की नलियां आपस में उलझी हुई थीं. अगर समय रहते इसका इलाज नहीं किया जाता, तो दिमाग में जानलेवा ब्लीडिंग हो सकती थी। दिमाग का दाहिना टेम्पोरल लोब चेहरों को पहचानने और उन्हें समझने में अहम भूमिका निभाता है। इसके कुछ हिस्से को निकालने के बाद कार्ल के लिए चेहरों को सामान्य तरीके से पहचानना मुश्किल हो गया। कार्ल का मामला दिखाता है कि किसी चेहरे की अलग-अलग खूबियां हमारी याददाश्त से निकलकर सामने मौजूद दूसरे चेहरों को देखने के तरीके को प्रभावित कर सकती हैं. यानी दिमाग में पहले से मौजूद किसी चेहरे की याद दूसरे व्यक्ति का चेहरा देखते समय भी उस पर हावी हो सकती है। कार्ल के अनुभव के बारे में जानने के बाद ब्रैड ड्रुशेन को साल 1986 में एक स्टडी याद आई. इसमें एक महिला बस में सफर कर रही थी. उसने एक यात्री की गोद में बैठे पूडल नस्ल के कुत्ते को देखा. इसके बाद उसे बस में बैठे हर यात्री के चेहरे पर उसी कुत्ते का चेहरा दिखाई देने लगा। इस महिला को इससे करीब नौ महीने पहले स्ट्रोक आया था. हालांकि, कार्ल का मामला इससे थोड़ा अलग है. उसे किसी दूसरे व्यक्ति के चेहरे पर पूरी बिल्ली का चेहरा नहीं दिखता, बल्कि बिल्ली के चेहरे की कुछ खासियतें ही इंसानों के चेहरों में नजर आती हैं.कार्ल को वास्तव में चेहरे कैसे दिखाई देते हैं, इसे समझाने के लिए ब्रैड ड्रुशेन ने पहले एक स्केच बनाया. इसके बाद उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से उस स्केच को ज्यादा वास्तविक तस्वीर में बदल दिया।